



ToB बालमंच

मासिक

दिसम्बर - 2025

नहीं कलम से....

शीतऋतु विशेषांक

इस अंक में पढ़ें

शीत ऋतु
आती है,
क्यों ?

प्रधान सम्पादक :- रूबी कुमारी
उ. म. वि. सरौनी, बौसी (बाँका)

अंक- 46

सम्पादक :- त्रिपुरारि राय
म. वि. रौटी, महिषी (सहरसा)



UMS KOTHIYA,SARAN

प्रधान संपादक की कलम से



प्यारे बच्चों,

शीतऋतु प्रकृति की शांत मुस्कान है। यह ऋतु हमें सिखाती है कि ठहराव भी जीवन का आवश्यक हिस्सा है। ठंडी हवा, कोहरे से ढकी सुबहें और सुनहरी धूप बच्चों के मन में नई कल्पनाओं को जन्म देती हैं। यही समय है जब कहानियाँ गुनगुनाई जाती हैं, किताबों से दोस्ती बढ़ती है और परिवार के साथ बिताए पल यादगार बनते हैं।

इस मौसम में अनुशासन और देखभाल का विशेष महत्व होता है। समय पर उठना, गरम कपड़ों का ध्यान रखना, संतुलित भोजन करना और नियमित अध्ययन—ये सभी आदतें बच्चों के व्यक्तित्व को मजबूत बनाती हैं। शीतऋतु हमें यह भी सिखाती है कि कठिन परिस्थितियों में धैर्य और समझदारी से आगे बढ़ना ही सफलता की कुंजी है।

ToB बालमंच का यह शीतऋतु विशेषांक बच्चों के सर्वांगीण विकास को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है। इसमें ज्ञान, संस्कार और मनोरंजन का सुंदर संगम है। हमें विश्वास है कि यह अंक बच्चों को सोचने, समझने और सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने की प्रेरणा देगा।

रूबी कुमारी

प्रधान संपादक, ToB बालमंच
उ. म. वि. सरौनी, बौंसी (बाँका)

सम्पादकीय



प्यारे बच्चों,

खुश रहो....

शीतऋतु अपने साथ ठंडक के साथ-साथ आत्मीयता, अनुशासन और नई ऊर्जा भी लेकर आती है। यह ऋतु हमें सिखाती है कि जैसे प्रकृति अपनी गति को थोड़ा थाम लेती है, वैसे ही हमें भी अपने भीतर झाँकने, सोचने और स्वयं को सँवारने का अवसर मिलता है। सुबह की धुंध, ओस से भीगी घास और गरम धूप की हल्की किरणें बच्चों के मन में जिजासा और उल्लास भर देती हैं।

शीतकाल बच्चों के लिए खेल, स्वास्थ्य और सीख—तीनों का संतुलन साधने का समय है। ठंड से बचाव के साथ-साथ पौष्टिक भोजन, नियमित दिनचर्या और व्यायाम का महत्व इस मौसम में और बढ़ जाता है। यह ऋतु हमें सहयोग, साझा करने और संवेदनशील बनने की प्रेरणा देती है—क्योंकि ठंड में हम केवल अपने बारे में नहीं, बल्कि दूसरों के आराम और सुरक्षा के बारे में भी सोचते हैं।

ToB बालमंच का यह शीतऋतु विशेषांक बच्चों की रचनात्मकता, कल्पनाशक्ति और सकारात्मक सोच को समर्पित है। इसमें प्रस्तुत रचनाएँ, कविताएँ और गतिविधियाँ न केवल मनोरंजन करेंगी, बल्कि जीवन-मूल्यों को भी मजबूत करेंगी। आशा है कि यह अंक बच्चों के मन को ऊष्मा देगा और उन्हें बेहतर, जागरूक तथा जिम्मेदार नागरिक बनने की दिशा में प्रेरित करेगा।

तुम्हारा ही,

त्रिपुरारि राय
संपादक सह ग्राफिक्स डिजाइनर
मध्य विद्यालय रौटी, महिंषी (सहरसा)

सम्पादक मंडल

प्रधान संपादक

संपादक-सह- ग्राफिक्स डिजाइनर

सह-संपादक

आमुख पृष्ठ सज्जा

सहयोगकर्ता

संरक्षक

- रुबी कुमारी, उ. म. वि. सरौनी, बौंसी (बाँका)
- त्रिपुरारि राय, म. वि. रौटी, महिषी (सहरसा)
- ज्योति कुमारी, म.वि. भनरा, चान्दन (बाँका)
- राजेश कुमार, फारबिसगंज कॉलेज (B. Ed विभाग),
अररिया
- 1. मृत्युंजयम् , म.वि.नवाबगंज, समेली, (कटिहार)
2. रंजेश कुमार, प्रा. वि. छुरछुरिया,
फारबिसगंज,(अररिया)
3. केशव कुमार, प्र.शि., प्रा.वि.मोहनपुर उर्दू, मुरौल,
मुजफ्फरपुर
4. पूजा कुमारी, उ. म. वि. सरौनी, बौंसी (बाँका)
- 1. शिव कुमार, संस्थापक- टीचर्स ऑफ़ बिहार
2. ई. शिवेंद्र प्रकाश सुमन, ToB तकनीकी टीम लीडर

:- स्थाई स्तंभ :-

- | | |
|-----------------------------|--------------------------|
| 1. प्रधान सम्पादक की कलम से | 14. विद्यालयी क्रियाकलाप |
| 2. सम्पादकीय | 15. क्या आप जानते हैं ? |
| 3. आवरण कथा | 16. अंग्रेजी सीखें |
| 4. कविता | 17. ड्राइंग / पेंटिंग |
| 5. कहानी | 18. उभरते सितारे |
| 6. हँसो रे बाबू | 19. फोटो ऑफ़ द मंथ |
| 7. बूझो तो जानें | 20. हिंदी ज्ञान |
| 8. वैज्ञानिक कारण | 21. प्रमुख दिवसें |
| 9. कहानी बनाओ प्रतियोगिता | 22. प्रेरक प्रसंग |
| 10. अखबारों की नजर में हम | 23. रोचक तथ्य |
| 11. उभरते सितारे | 24. खेल-खेल में योग |
| 12. तकनीकी कोना | 25. तुम भी बनाओ..... |
| 13. बालमन | 26. आपकी बात आपकी जुबानी |



टीचर्स ऑफ बिहार गीत

एम आर विश्वती

चांद तारों को साथ लाएंगे,
हम बहारों को साथ लाएंगे।

जैसे आती नहीं नज़र दुनिया,
हम बागें वो हँसीं दुनिया,
हौसला और अपनी माँज़ल से,
सब नजारों को साथ लाएंगे।
चांद तारों को साथ लाएंगे...

प्रेम की रोशनी जो विरहेगी
और प्रतिभा सबकी निरहेगी,
खींच लेंगे गगन से छढ़धनष
बहते धारों को साथ लाएंगे।
चांद तारों को साथ लाएंगे...

हम हैं निर्माता अपने भारत के,
पेर करने हैं सपने भारत के
हम कलम के वही सिपाही हैं
जो हजारों को साथ लाएंगे।
चांद तारों को साथ लाएंगे....

हमने माना, टीचर्स ऑफ़ बिहार
दीप ऐसा जनाएँगा इस बार,
हम नवाचारी शिक्षा की रह में
बेसहारे को साथ लाएंगे।
चांद तारों को साथ लाएंगे...

www.teachersofbihar.org

प्रेरक प्रसंग



एक छोटे से गाँव में आरव नाम का एक बालक रहता था। शीत क्रृतु अपने पूरे प्रभाव में थी। सुबह-सुबह घना कोहरा छाया रहता और ठंडी हवा से लोग देर तक रजाइयों में दुबके रहते। आरव भी रोज़ देर से उठने लगा था और स्कूल जाने में टालमटोल करता था।

एक दिन उसके दादाजी उसे अपने साथ खेतों की ओर ले गए। चारों ओर ओस से भीगी फसलें थीं। दादाजी ने मुस्कुराते हुए कहा,- “देखो आरव, ठंड में ये पौधे रुकते नहीं, बल्कि चुपचाप मज़बूत होते रहते हैं।”

उन्होंने आगे बताया कि शीत क्रृतु में बीज ज़मीन के भीतर रहते हुए अपनी जड़ों को और गहरा करते हैं, ताकि वसंत आते ही वे हरे-भरे होकर लहलहा सकें। दादाजी ने समझाया,- “मुश्किल समय हमें रोकने नहीं, बल्कि भीतर से मज़बूत बनाने आता है।”

यह सुनकर आरव को अपनी गलती समझ में आ गई। अगले दिन से वह ठंड के बावजूद समय पर उठने लगा, मन लगाकर पढ़ाई करने लगा और अपने काम खुद करने लगा। कुछ ही दिनों में उसकी आदतें बदल गईं और उसके आत्मविश्वास में भी वृद्धि हुई।

पूजा कुमारी,
सहायक शिक्षक
उ० म० वि० सरौनी बौंसी बांका

शुभकामना सन्देश



टी ओ बी बालमंच के दिसंबर अंक के प्रकाशन के इस शुभ अवसर पर मैं सभी नन्हे रचनाकारों, कलाकारों और पाठकों को हार्दिक शुभकामनाएँ देती हूं। यह पत्रिका ग्रामीण तथा आंतरिक क्षेत्रों में निवास करने वाले बच्चों की छिपी हुई प्रतिभाओं को पहचानने, सँवारने और उन्हें अभिव्यक्ति का सशक्त मंच प्रदान करने का एक सराहनीय प्रयास है।

टी ओ बी बालमंच के माध्यम से बच्चों की कला, चित्रकला, लेखन और रचनात्मक सोच को नित नया आयाम मिले। यह मंच न केवल उनके आत्मविश्वास को बढ़ाए बल्कि उन्हें अपने सपनों को साकार करने की नित नई प्रेरणा देता रहे।

मैं कामना करती हूं कि यह पत्रिका निरंतर प्रगति करे, अधिक से अधिक बच्चों की प्रतिभा को उजागर करे और उनके उज्ज्वल भविष्य की राह प्रशस्त करे। सभी बाल प्रतिभाओं को मेरा स्वेहपूर्ण आशीर्वाद एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए ढेरों शुभकामनाएँ।

हार्दिक शुभेच्छाओं सहित

तृष्णा कुमारी
व्याख्याता
डायट, बांका।

ToB School Activity Link.....

- <https://www.facebook.com/share/v/1DBGkbPAAt/>
- <https://www.facebook.com/share/v/1WSOj2PVDw/>
- <https://www.facebook.com/share/v/14TmHBi9oXh/>
- <https://www.facebook.com/share/v/16phx4D4ko/>
- <https://www.facebook.com/share/v/1BuCV5F3Fd/>



Jyoti Kumari, 6, UMS
Baburbari, Sonpur,
Saran

मेरे गाँव का विद्यालय

मेरे बबुरबानी गाँव का विद्यालय,
ज्ञान का प्यारा घर है।
यहाँ पढ़ना, लिखना, खेलना,
हर दिन नया सफर है।
शिक्षक, हमें प्यार सिखाते,
सच की राह दिखाते हैं।
मेहनत और अनुशासन,
हम सबको अपनाते हैं।
सपनों को पंख मिलते हैं,
आशा की किरण जगती है।
मेरे बबुरबानी गाँव का विद्यालय,
हम सबकी पहचान बनाती है।

ज्योति कुमारी
कक्षा -6
उत्क. म. वि, बबुरबानी,
सोनपुर, सारण



कहानी बनाओ



दिए गए चित्र को देखें और उसपर एक सुन्दर सा कहानी लिख कर हमें भेजें। उत्कृष्ट कहानी को अगले अंक में छापा जाएगा। कहानी के साथ अपना नाम, कक्षा, विद्यालय का नाम अवश्य लिखें।

बूझो तो जानें..	कशीत ऋतु प्रश्नोत्तरी
1. सफेद-सफेद ओस की बूँदें, हरी धास पर मोती बनूँ। ठंडी रात, सुहानी सुबह, बताओ मैं कौन हूँ? उत्तर: ओस	प्रश्न 1. शीतऋतु क्या है? उत्तर: शीतऋतु वर्ष का वह समय है जब मौसम ठंडा हो जाता है।
2. रजाई में दुबक जाऊँ, अलाव के पास सबको बैठाऊँ। ठंड से बचाव का उपाय बनूँ, बताओ मैं क्या हूँ? उत्तर: अलाव / आग	प्रश्न 2. शीतऋतु भारत में किन महीनों में होती है? उत्तर: शीतऋतु भारत में नवंबर से फरवरी तक होती है।
3. ना पानी, ना बादल भारी, फिर भी दिखे सब धूंध-धूंधारी। सुबह-सुबह छा जाऊँ, बताओ मैं कौन हूँ? उत्तर: कोहरा	प्रश्न 3. शीतऋतु में हमें कैसे कपड़े पहनने चाहिए? उत्तर: शीतऋतु में हमें ऊनी और गरम कपड़े पहनने चाहिए।
4. पापा: सुबह जल्दी उठो। बच्चा: पापा, ठंड में सुबह भी देर से आती है! उत्तर: गरम दूध, सूप, तिल, गुड़ और गाजर जैसे खाद्य पदार्थ लाभदायक होते हैं।	प्रश्न 4. सर्दियों में कौन-से खाद्य पदार्थ लाभदायक होते हैं? उत्तर: गरम दूध, सूप, तिल, गुड़ और गाजर जैसे खाद्य पदार्थ लाभदायक होते हैं।
5. पापा: सुबह जल्दी उठो। बच्चा: पापा, ठंड में सुबह भी देर से आती है! उत्तर: क्योंकि धूप हमें गरमी देती है और शरीर को आराम पहुँचाती है।	प्रश्न 5. शीतऋतु में सूरज की धूप क्यों अच्छी लगती है? उत्तर: क्योंकि धूप हमें गरमी देती है और शरीर को आराम पहुँचाती है।
6. सर्दियों में सबसे बहादुर कौन? “जो ठंडे पानी से नहाए!”	प्रश्न 6. सर्दियों में हमें किन बातों का ध्यान रखना चाहिए? उत्तर: हमें साफ कपड़े पहनने, ठंडे से बचने और पौष्टिक भोजन करने का ध्यान रखना चाहिए।

....Next to back episode

SENTENCE ADVERB:

A sentence adverb starts the sentence and modifies the whole sentence.

Example: Hopefully, Certainly etc

ADVERB OF TIME OR FREQUENCY (When?)

Adverbs of time/frequency indicate time or frequency of the action in the sentence.

Always, never, often, eventually, now, frequently, occasionally, once, forever, seldom, before, Sunday, Monday, 10 AM, 12 PM, etc. are common adverbs of time/frequency.

ADVERB OF PLACE OR DIRECTION (Where?)

Adverbs of place/direction that indicate place/direction of the action in the sentence. They answer the question ‘where is the action performed?’.

Across, over, under, in, out, through, backward, there, around, here, sideways, upstairs, in the park, in the field, in that place, etc. are some common adverbs of place/direction.

Example:

- I went through the jungle. He plays in the field.
- Alex is going to school.

To be continued.....



महत्वपूर्ण दिवस

- 1 दिसंबर – विश्व एड्स दिवस
- 2 दिसंबर – राष्ट्रीय प्रदूषण नियंत्रण दिवस
- 3 दिसंबर – अंतर्राष्ट्रीय दिव्यांग दिवस
- 4 दिसंबर – भारतीय नौसेना दिवस
- 5 दिसंबर – विश्व मृदा दिवस
- 7 दिसंबर – सशत्र सेना जंडा दिवस
- 9 दिसंबर – अंतर्राष्ट्रीय भूषाचार विरोधी दिवस
- 10 दिसंबर – मानव अधिकार दिवस
- 11 दिसंबर – अंतर्राष्ट्रीय पर्वत दिवस
- 14 दिसंबर – राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण दिवस
- 16 दिसंबर – विजय दिवस
- 18 दिसंबर – अल्पसंख्यक अधिकार दिवस
- 19 दिसंबर – गोवा मुक्ति दिवस
- 22 दिसंबर – राष्ट्रीय गणित दिवस (श्रीनिवास रामानुजन जयंती)
- 23 दिसंबर – किसान दिवस (चौधरी चरण सिंह जयंती)
- 24 दिसंबर – राष्ट्रीय उपभोक्ता दिवस
- 25 दिसंबर – क्रिसमस / सुशासन दिवस
- 26 दिसंबर – वीर बाल दिवस
- 30 दिसंबर – शहीद दिवस

वैज्ञानिक कारण

शीत ऋतु आती है, क्यों ?

शीत ऋतु पृथ्वी की धूरी के झुकाव के कारण आती है। पृथ्वी अपनी धूरी पर लगभग $23\frac{1}{2}$ डिग्री झुकी हुई है और सूर्य के चारों ओर परिक्रमा करती है। जब भारत सहित उत्तरी गोलार्ध सूर्य से थोड़ा दूर झुका होता है, तब सूर्य की किरणें तिरछी पड़ती हैं। तिरछी किरणों से कम ऊषा मिलती है, इसलिए तापमान घट जाता है और शीत ऋतु आती है।

इस समय दिन छोटे और रातें लंबी होती हैं, जिससे पृथ्वी को कम समय तक गर्मी मिलती है। यही शीत ऋतु का मुख्य वैज्ञानिक कारण है। ■

हिंदी ज्ञानः पत्र लेखन

अपने माताजी को एक पत्र लिखो जिसमें सर्दी के मौसम में कुछ गर्म कपड़े की मांग की गई हो।

पूजनीय माताजी,

सादर प्रणाम।

आशा है आप स्वस्थ और प्रसन्न होंगी। मैं यहाँ कुशलपूर्वक हूँ। माताजी, यहाँ सर्दी का मौसम बहुत बढ़ गया है। सुबह और रात में ठंड अधिक लगती है। मेरे पास जो स्वेटर और जैकेट हैं, वे अब पुराने हो गए हैं और ठंड से पूरी तरह बचाव नहीं कर पा रहे हैं।

इसलिए आपसे विनम्र निवेदन है कि कृपया मेरे लिए एक गर्म स्वेटर, एक ऊनी टोपी और एक मफलर भेज दें। यदि संभव हो तो ऊनी मौजे भी भेज दीजिएगा। इससे मुझे ठंड से राहत मिलेगी और पढ़ाई में भी मन लगेगा।

घर के सभी सदस्यों को मेरा प्रणाम कहिएगा। आपके उत्तर की प्रतीक्षा रहेगी।

आपका प्यारा पुत्र,
रजनीश



आओ योग सीखें.....

शीत क्रृतु में किए जाने वाले योग और प्राणायाम

शीत क्रृतु में शरीर को गरम, लचीला और रोग-प्रतिरोधक बनाए रखने के लिए कुछ विशेष योग बहुत लाभकारी होते हैं। नीचे शीत क्रृतु में करने योग्य योगासन और प्राणायाम दिए जा रहे हैं—

शीत क्रृतु में करने योग्य योगासन

1. सूर्य नमस्कार: शरीर में ऊष्मा बढ़ाता है, सर्दी-खाँसी से बचाव करता है।
2. भुजंगासन: फेफड़ों को मज़बूत करता है और शरीर को गरम रखता है।
3. ताड़ासन: शरीर में स्फूर्ति लाता है और रक्त संचार बढ़ाता है।
4. वज्रासन: पाचन शक्ति बढ़ाता है, ठंड में बहुत लाभकारी।
5. पवनमुक्तासन: गैस व पेट की समस्या दूर करता है।

शीत क्रृतु में उपयोगी प्राणायाम

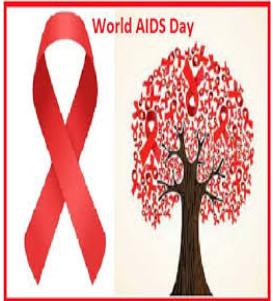
6. कपालभाति: शरीर को गरम रखता है और रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है।
7. भस्त्रिका प्राणायाम: फेफड़ों को सक्रिय करता है और ठंड से बचाव करता है।
8. अनुलोम-विलोम: शरीर और मन को संतुलित रखता है।

ध्यान रखने योग्य बातें:-

- योग सुबह धूप में या गरम स्थान पर करें।
- खाली पेट योग करना सबसे अच्छा होता है।
- बच्चों और बुजुर्गों को हल्के आसन ही करने चाहिए।



विश्व एड्स दिवस (1 दिसंबर) - विशेष जानकारी

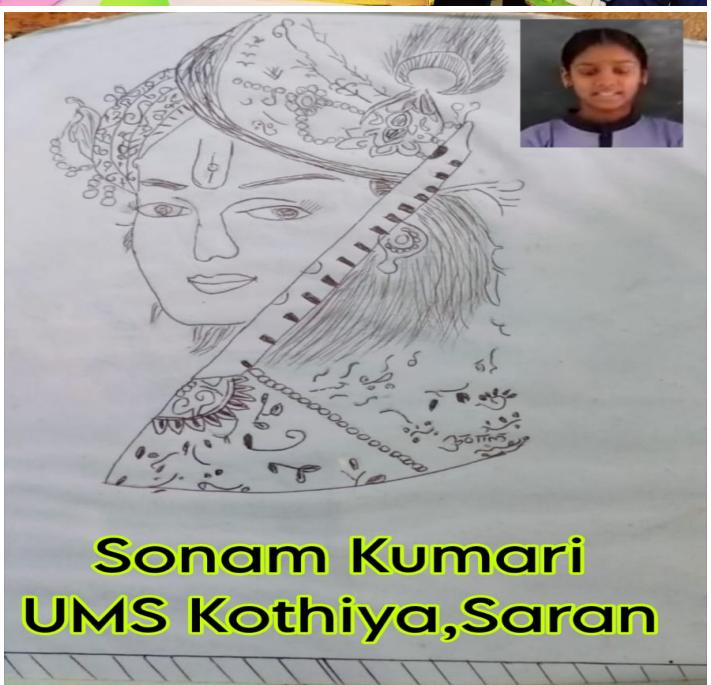
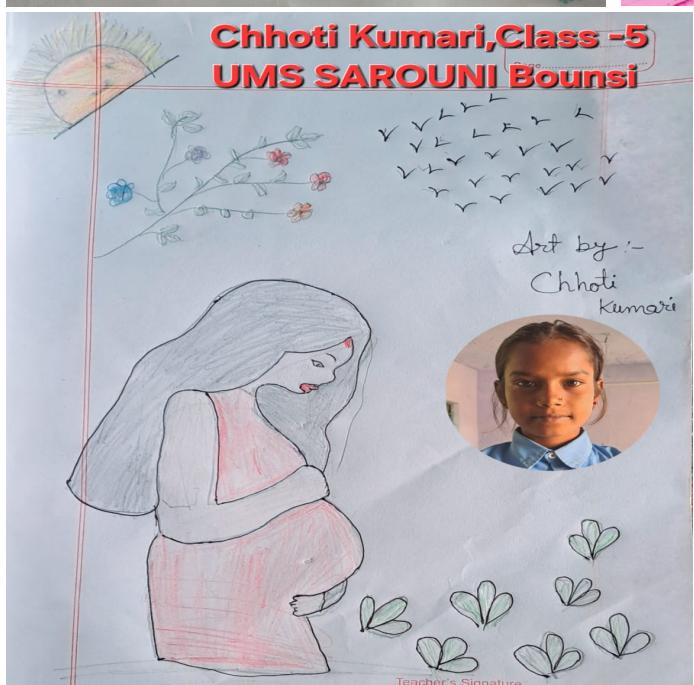


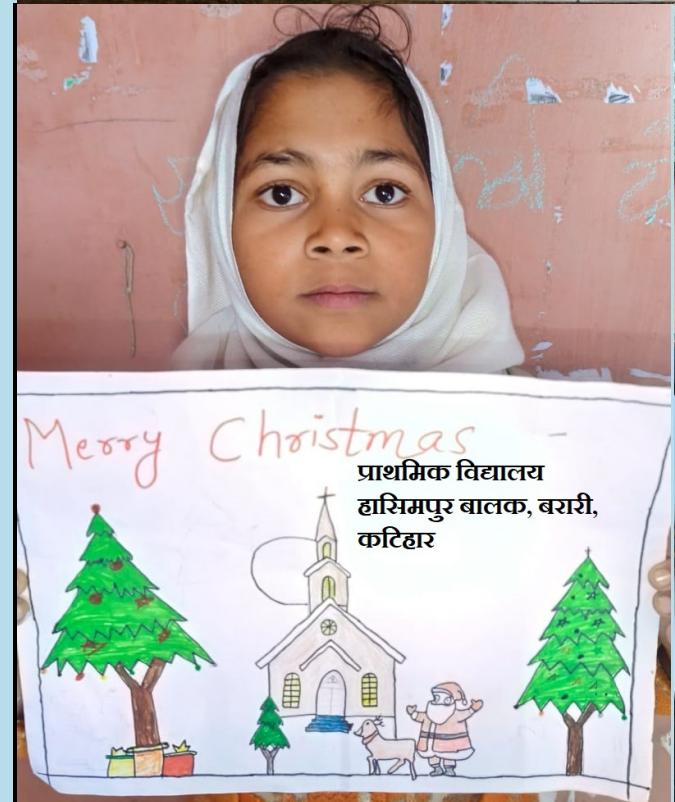
विश्व एड्स दिवस हर वर्ष 1 दिसंबर को मनाया जाता है। इसका उद्देश्य एचआईवी/एड्स के प्रति जागरूकता फैलाना, इससे पीड़ित लोगों के प्रति सहानुभूति दिखाना और रोकथाम व उपचार के बारे में जानकारी देना है।

इस दिवस की शुरुआत 1988 में विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) द्वारा की गई थी। एचआईवी (HIV) एक वायरस है जो शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को कमज़ोर करता है। यदि समय पर इलाज न मिले तो यह एड्स में बदल सकता है, लेकिन एड्स छूने, साथ खाने या हाथ मिलाने से नहीं फैलता—यह जानना बहुत जरूरी है।

आज के समय में एंटी-रेट्रोवायरल थेरेपी (ART) से एचआईवी संक्रमित व्यक्ति सामान्य जीवन जी सकता है। जागरूकता, सुरक्षित व्यवहार और समय पर जांच से इस बीमारी को रोका जा सकता है। लाल रिबन विश्व एड्स दिवस का प्रतीक है, जो एकजुटता, आशा और समर्थन का संदेश देता है।

संदेश: “जानकारी ही सुरक्षा है — भेदभाव नहीं, सहयोग करें।”





सावित्रीबाई फुले

सावित्रीबाई फुले भारत की प्रथम महिला शिक्षिका, महान समाज-सुधारक, कवयित्री और नारी मुक्ति की अग्रदूत थीं। उन्होंने शिक्षा, समानता और सामाजिक न्याय के क्षेत्र में ऐतिहासिक योगदान दिया। उनका जीवन साहस, संघर्ष और सेवा का प्रतीक है।

प्रारंभिक जीवन: उनका जन्म: 3 जनवरी 1831 को नायगांव, जिला सतारा (वर्तमान महाराष्ट्र) में हुआ था। इनके पिता का नाम खंडोजी नेवसे पाटिल था। इनका विवाह 1840 में महात्मा ज्योतिराव फुले से हुआ था। विवाह के समय सावित्रीबाई बहुत छोटी थीं और निरक्षर थीं। महात्मा फुले ने स्वयं उन्हें पढ़ना-लिखना सिखाया और आगे चलकर शिक्षक-प्रशिक्षण भी दिलाया।

शिक्षा और शिक्षिका के रूप में योगदान: सावित्रीबाई ने अहमदनगर और पुणे के नार्मल स्कूलों से शिक्षक-प्रशिक्षण प्राप्त किया। 1848 में पुणे के भिड़े वाडा में उन्होंने ज्योतिराव फुले के साथ मिलकर लड़कियों का पहला स्कूल खोला। वे भारत की पहली प्रशिक्षित महिला शिक्षिका बनीं। उस समय लड़कियों और दलितों की शिक्षा का घोर विरोध था। स्कूल जाते समय उन पर कीचड़, गोबर और पत्थर फेंके जाते थे, फिर भी वे अडिग रहीं।



- सामाजिक सुधार के कार्य:** सावित्रीबाई फुले ने अनेक कुरीतियों के विरुद्ध संघर्ष किया।
- नारी शिक्षा और समानता:** लड़कियों और दलित बच्चों के लिए कई स्कूल खोले। विधवाओं और शोषित महिलाओं की शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया।
 - बाल विवाह और सती प्रथा का विरोध:** उन्होंने बाल विवाह का विरोध किया। महिलाओं को आत्मसम्मान और स्वतंत्रता का संदेश दिया।
 - विधवा पुनर्विवाह और आश्रय गृह:** 1863 में “बालहत्या प्रतिबंधक गृह” की स्थापना की, जहाँ विधवाओं को सुरक्षित आश्रय मिलता था। समाज के भय से छोड़े गए बच्चों की रक्षा की जाती थी।
 - छुआछूत और जातिवाद के विरुद्ध संघर्ष:** दलितों के लिए कुएँ और सार्वजनिक स्थान खोले। सभी मनुष्यों को समान मानने का संदेश दिया।

साहित्यिक योगदान: सावित्रीबाई एक संवेदनशील कवयित्री भी थीं। उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं- “काव्यफुले” (1854), “बावनकशी सुबोध रत्नाकर” (1892)। इन कविताओं में शिक्षा, समानता, नारी चेतना और सामाजिक अन्याय के विरुद्ध स्वर मुखर हैं।

प्लेग के समय सेवा और निधन: 1897 में पुणे में प्लेग महामारी फैली। सावित्रीबाई ने बीमारों की सेवा करते हुए उन्हें अस्पताल पहुँचाया। सेवा करते-करते वे स्वयं संक्रमित हो गईं। 10 मार्च 1897 को इनका निधन हो गया। उन्होंने मानव सेवा को अपने जीवन का अंतिम उद्देश्य बना लिया था।

महत्व और विरासत: सावित्रीबाई फुले नारी शिक्षा की जननी मानी जाती हैं। वे सामाजिक न्याय, समानता और शिक्षा की प्रतीक हैं। आज भी उनके विचार महिला सशक्तिकरण और सामाजिक सुधार के लिए प्रेरणा हैं।

निष्कर्ष: सावित्रीबाई फुले का जीवन हमें सिखाता है कि शिक्षा सबसे बड़ा हथियार है और साहस के साथ समाज की बुराइयों को बदला जा सकता है। वे केवल एक शिक्षिका नहीं, बल्कि क्रांति की मशाल थीं।

मुख्यमंत्री विद्यालय सुरक्षा कार्यक्रम

दैनिक जागरण

बच्चे बने सड़क सुरक्षा के ब्रांड एंबेसडर

जागरण संवाददाता, सीतामधी: नगर पालिका मन्त्री विद्यालय, भवांटेपुर के प्रांगण में शुक्रवार को सड़क सुरक्षा जागरूकता का आयोजन किया गया, जिसमें छात्र-छात्राओं ने सड़क सुरक्षा का ब्रांड एंबेसडर बनाया गया। कार्यक्रम को संस्कृति करते हुए यातायात पुलिस उपायोगिक दैपक कुमार ने कहा कि सड़क पर आपकी सुरक्षा आपकी अपनी है। यातायात नियमों का पालन कर ही टुर्नटनओं को रोक जा सकता है। हाईस्कूल दीपक कुमार ने बच्चों को बताया कि उपर्युक्त बच्चों को बताया कि विना अस्ताल या नसीन होम में उपचार कराया जा सकता है। कार्यक्रम के दौरान छात्र-छात्राओं ने पलली, वशिष्ठ पटेल, रविश, शालिनी, सत्यम, अपने और सत्ता ने सड़क सुरक्षा से जुड़े कई सवाल उठाये। शहर में निजी स्कूल बच्चों की भूमिका, अस्ताल रोड पर लगाने वाले जाम, विना अनुकूलता वालन संचालन, अवरस्पेंडिंग और यातायात नियमों के उल्लंघन जैसे मुंहें पर भी चर्चा हुई। यातायात पुलिस नियमों के प्रशांत कुमार ने कहा कि सड़क टुर्नटनओं ने रोकने के लिए आम नागरिकों को

बच्चों को सड़क सुरक्षा को लेकर किया गया जागरूक, वहाँ ए गे सड़क पर चलने के नियम, वाहन वालों को लिए भी दाताया नियम अपेल की। उन्होंने बताया कि नए कानून के तहत बायकल के इलाज के लिए पुलिस की प्रतीक्षा किया जाना अस्ताल या नसीन होम में उपचार कराया जा सकता है। कार्यक्रम के दौरान छात्र-छात्राओं ने पलली, वशिष्ठ पटेल, रविश, शालिनी, सत्यम, अपने और सत्ता ने सड़क सुरक्षा को शपथ दिलाई गई। शाश्वत में बच्चों ने अपने अभियांत्रिकों को यातायात नियमों के पालन के लिए प्रेरणा करने तथा सीधी गई बातों की घट-परिवार और समाज तक पहुंचाने का सकलन लिया। इस अवसर पर विद्यालय की शिक्षिकार्यालय पुलिस कुमारी सिंह, विना कुमारी, सुनील कुमारी, कुमारी रत्ना, पूनम कुमारी, मीना गणी, मीरा कुमारी, मीना कुमारी सहित नियमों को लेकिन मुद्दा ये है कि अधिकारी उनका खराब कर्यान्वयन कर रहे हैं।

वायु प्रदूषण को लेकर सुप्रीम कोर्ट ने जतायी चिंता

नवी दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली एनसीआर में वायु प्रदूषण को लेकर सुप्रीम कोर्ट ने चिंता जताई और कहा कि वह सिर्फ वही निर्देश लागू करेगा, जिनका पालन किया जा सके क्योंकि इसका सबसे ज्यादा असर गरीबों पर देखने को मिलेगा। कोर्ट ने कहा कि अदालत को सिर्फ वही दिशा-निर्देश पारित करने चाहिए, जो लागू करने लायक हों।

मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत, जस्टिस जॉयमाल्या बागची और विना अनुकूलता वालन संचालन, समाज तक पहुंचाने का सकलन लिया। इस अवसर पर विद्यालय की शिक्षिकार्यालय पुलिस कुमारी सिंह, विना कुमारी, सुनील कुमारी, कुमारी रत्ना, पूनम कुमारी, मीना गणी, मीरा कुमारी सहित नियमों के लिए उपाय मौजूद हैं, लेकिन मुद्दा ये है कि अधिकारी उनका खराब कर्यान्वयन कर रहे हैं।

अपराजिता सिंह ने कहा कि जब तक कोर्ट कोई निर्देश नहीं देता, तब

तक अधिकारी पहले से मौजूद प्रोटोकॉल का पालन नहीं करते हैं। इस पर सीजे आई सूर्यकांत ने कहा, %बुधवार को मामला सुनवाई पर लगेगा, तीन जांचों की बेंच इस पर सुनवाई करेगी और हम वही आदेश देंगे जो लागू हो सकें।

सीजे आई सूर्यकांत ने अपराजिता सिंह की दलीलों पर कहा, %अगर दिक्कतें आ रही हैं तो इसका क्या हल है और व्या निर्देश दिए जाएं, हम सिर्फ वही निर्देश देंगे। अगर हम कोई आदेश पारित करेंगे तो हो सकता है को कहें तक हम इनका पालन करने में असमर्थ हैं या वे इसकी गंभीरता को नहीं समझेंगे। हमें दोनों समस्याओं का हल हूँडना पड़ेगा। कुछ निर्देश हैं, जिनको बलपूर्वक लागू करवाया जा सकता है। लोगों को उन परिस्थितियों के अनुसार ढलना होगा। उन्हें अपना लाइफस्टाइल (शेष पृष्ठ ९ पर)

शीर्ष अदालत ने ऐसे मामले संवेदनशीलता से निपटाने के निर्देश दिए देशभर में बच्चों की तस्करी चिंताजनक : सुप्रीम कोर्ट

अदालत से

प्रभात कुमार

नईदिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को एक मामले की सुनवाई के दौरान कहा कि देश में बच्चों की तस्करी और पैसा कमाने के मकसद से उनका यौन शोषण चिंताजनक है। जस्टिस मनोज मिश्रा और जॉयमाल्या बागची की पीठ ने बच्चों तस्करी और यौन उत्पीड़न के मामलों को संवेदनशीलता से निपटने के लिए विस्तृत दिशा-निर्देश जारी करते हुए यह टिप्पणी की।

पीठ ने कहा कि अदालतों को तस्करी और वेश्यावृत्ति के नाबालिग पीड़ितों के सबूतों को संवेदनशीलता और वास्तविकता से समझना चाहिए। इसके साथ ही, शीर्ष अदालत ने अदालतों को छोटी-मोटी कमियों या व्यवहार के बारे में

नाबालिग पीड़ित का बयान अविश्वसनीय मना जाए...

कोर्ट ने कहा है कि कई बार नाबालिग पीड़ित मामले को बारीकी से नहीं बता पता। उसके बयान को अविश्वसनीय मानकर नहीं चलना चाहिए। नाबालिग पीड़ित की सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक स्थिति का ध्यान रखना चाहिए। ये ध्यान रखना होगा कि नाबालिग पीड़ित के लिए घटना को बयान करना आसान नहीं होता।

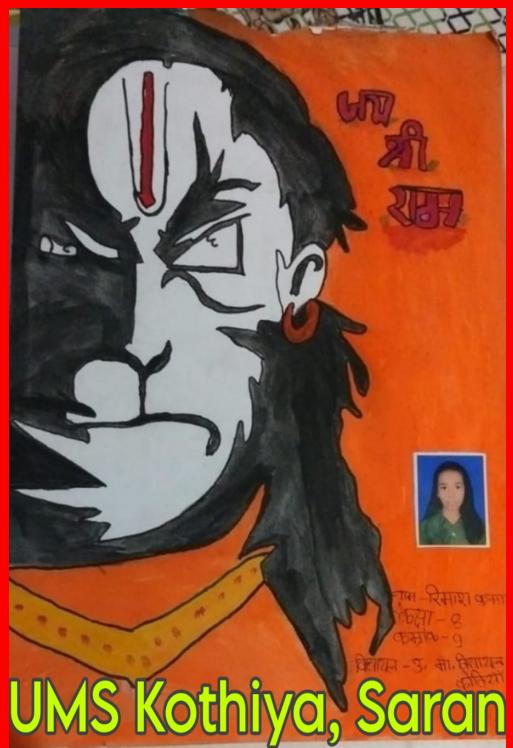
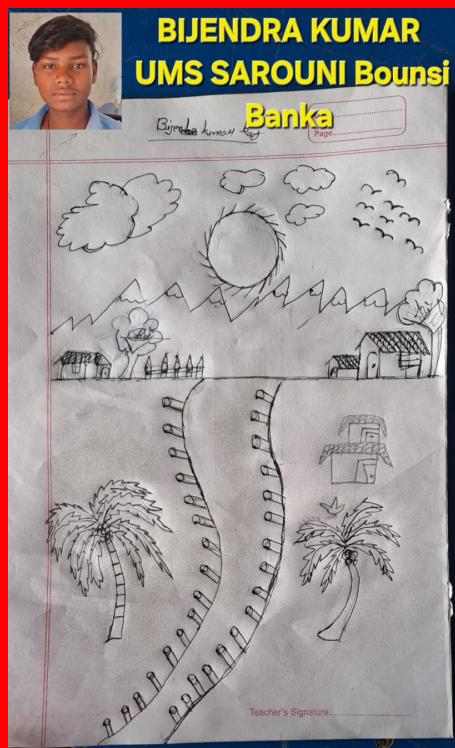
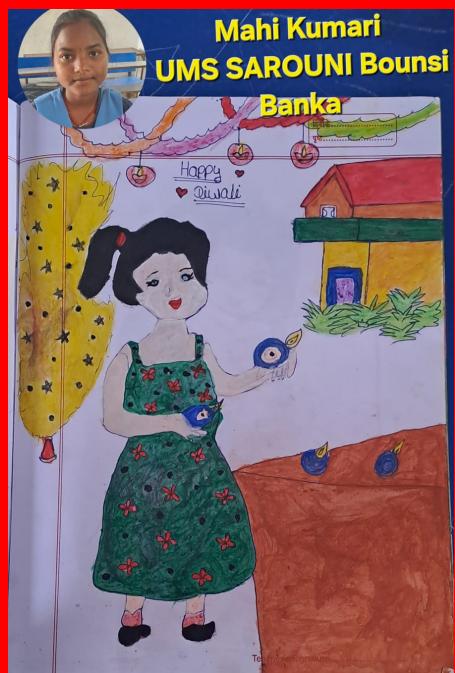


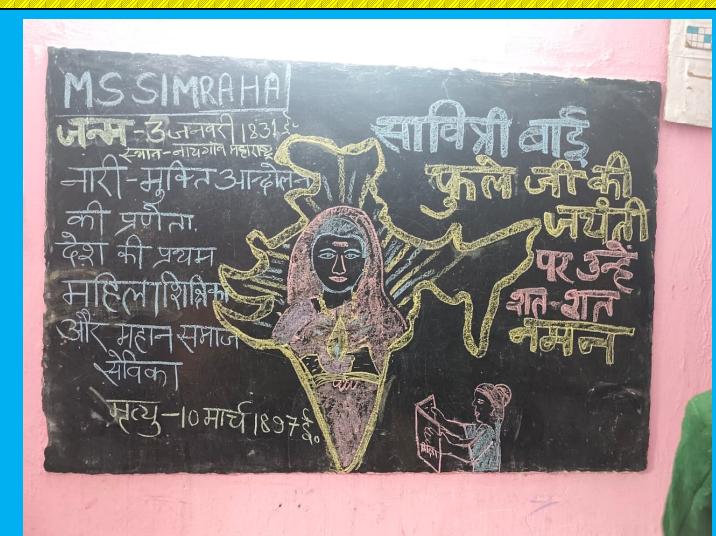
यह है मामला

नवंबर 2010 में बैंगलूरु के पीन्या इलाके में घर में पुलिस ने एक अभियान के तहत नाबालिग पीड़िता को बचाया था। इस मामले में के.पी. किरणकुमार उर्फ किरण और उसकी पत्नी के खिलाफ मामला दर्ज किया था। इस मामले में पीड़िता ने बयान दिया था कि उसे जबरन घर में कैद रखा गया था और उसका यौन शोषण किया गया।

बनी-बनाई धारणाओं के आधार पर उनकी गवाही को खारिज नहीं करने की चेतावनी दी। पीठ ने कहा है कि बच्चों की तस्करी के मामले अलग-थलग घटनाएं नहीं हैं, बल्कि संगठित शोषण के एक गहरे पैटर्न का हिस्सा हैं, जो कानूनी सुरक्षा उपायों के बावजूद देश

में धड़ल्ले से जारी है। फैसले में यह भी कहा गया है कि ऐसे मामलों का न्यायिक मूल्यांकन साक्ष्यों के कठोर या बहुत तकनीकी मानकों के बजाय नाबालिग पीड़ितों की वास्तविकताओं के प्रति संवेदनशीलता पर आधारित होना चाहिए।





**Payal Bharti, Class-2
UMS SAROUNI Bounsi**



**UMS BHASDIRA
BARARI KATIAR**



यह पत्रिका आपको कैसी लगी हमें whatsapp के माध्यम से बताएं | हम आपके विचारों को पत्रिका के अगले अंक में प्रकाशित करेंगे | पत्रिका के अगला अंक नववर्ष विशेषांक के लिए भी अपनी रचनाएं हमें भजें | हमारा whatsapp नम्बर है 8877318781 (Tripurari Roy)

आपदा प्रबंधन विभाग
बिहार सरकार

शीतलहर/ठंड से बचाव हेतु सलाह

ठंड के दिनों में स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं को पहचानें

- उच्च रक्तचाप, हृदय शोग एवं मधुमेह के गरीज पिकिट्सक की सलाह अनुसार आपातकालीन नेडिकल किट तैयार रखें।
- शीतलहर के लक्षणों को पहचानें, जैसे, हाथ व पैर की ऊंगलियाँ, कानों, नाक आदि पर सफेद या पीला दाग उभर आना।
- किसी नी आपातकालीन सहायता के लिए आपदा प्रबंधन विभाग के राज्य आपातकालीन संचालन केंद्र पर संपर्क करें।

हेल्पलाइन नंबर: 0612-2294204/205 | आपातकालीन सहायता नंबर: 1070

फेसबुक: @IPRDBihar | ट्विटर: @BiharDMD | इंस्टाग्राम: @BiharDisasterManagement

उभरते सितारे

जिनको भी प्रशस्ति-पत्र मिल रहा है उनका लिस्ट इस लिंक पर उपलब्ध है:-
<https://www.teachersofbihar.org/award>

ToB उभरते सितारे प्रशस्ति पत्र

Himanshu Kumar
RMS VISHAMBHARACHAK, Amarpur, Banka,
को टीचर्स ऑफ बिहार के 'बालमंच- नन्हीं कलम से' ऑनलाइन ई-मेरीजीन में उनके सहयोग, समर्पण एवं 'DRAWING.....' के लिए 'ToB उभरते सितारे' के रूप में चयनित किया जाता है।
भविष्य के लिए असीम शुभकामनायें।

Rkumar
रूबी कुमारी
प्रद्युम्न संपादिका, बालमंच

Srijan
त्रिपुरारी राय
संपादक एवं क्रिएटिव डिजाइनर, बालमंच
www.teachersofbihar.org

Srey
शिव कुमार
संस्थापक

THANK YOU